

ओरशान्ति। लहानी वाप स्थानी वच्चों को समझते हैं। एक तो वाप समझते हैं जब यहाँ बैठते हौं या बैठते हौं, चलते हौं तो दुधि पैयह आता है कि यह सुप्रीम वाप है, टोचर भी है सुप्रीम सदगुरु भी है। यह दिल में याद आना चाहेश। सिंप शिव वाला भी उहाँ उनका आप युपेशन भी जानना चाहिए। यह दुधि में जाने से भी पक्का निश्चय है जावेगा। क्योंक्यह तो जानते हौं सदगुरु शान्तिधार भी है जाते हैं, टोचर भी है सुख-धार भी ले जाते हैं। वाचा तो है ही। भीड़-गार्ड ने उनको और भी लासी एट ल्लै दें। गार्ड-गार्ड नहीं करते। क्योंकि वहाँ तो वाप कासभी कुछ फिला हुआ है। तो उनको याद करने की दरकार ही नहीं। जन्म-जन्मान्तर लौकिक वाप की तो याद रहती ही है। क्योंकि नया 2 जन्म फिलता है। वाप समझते हैं तुम है। समझ जादें और साहबजादियां। सच्चे 2 साहब के सन्तान। सभी ब्रदर्स ठहरे सभी साहबजादे तो जरु सभी को हक फिलता चाहिए। परन्तु पढ़ते नहीं हैं तो सभीको ऐक जैसा हक फिलता न सके। नम्बरबार पुस्तार्थ अनुसार ही हक फिलता है। राजधानी स्थापन हो रही है ना। भल गांधी जी रामराज्य स्थापन करने का पुरुषार्थ करते थे यह भी उनकी महिमा करते हैं, वाकीवह गांधी ऐसे नहीं कहते थे मैं रामराज्यस्थापन कर्णा वह चाहते थे रामराज्य चाहिए। ऐसे नहीं समझता थे भी उस रामराज्य में सभ बनुं या स्वर्ग में श्री कृष्ण बनुं। नहीं। उनको बनने का ही नहीं है। तो यह ख्याल भी कैसे आये। तुमको तो निश्चय है जावा वह था हवद का वापू दी। यह है बैहद कावापू जो। उनसे कोई बरसा फिल न सके। यह तो है निराकार सौ भी बैहद का छोप। वह गांधी भी रामराज्य का अर्थ कुछ नहीं समझते थे। शान्ति का राज्य चाहता था। वह तो समझते हैं स्वर्गीकौलखो वर्ष चाहिए। पिर भी उनके निये भारतवासीयों को लहुत हो रेगाड था। सभी को नहीं हो सकता। तुमको तो वाप के लिये सभी को रिंग विठाना है। सभी कहते हैं हम ब्रदर्स हैं। तो बरसा जरु तो चाहिए। भल वाप अक्षर कहते हैं परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। वाप आते हैं या उनके पास जाना होता कुछ भी पता नहीं है। क्योंकि वह सभी है भवित-वार्ग में। तुम्हारी तो हैनलैज। भवित को नालैज नहीं कहा जाता। वह है जिसनानी नालैज। यह पिर है लहानी नालैज। नालैज में हैशा एमआरजेट चौमि है। भीड़-गार्ड में एमआरजेट फैर्ड डैटर्ड कि भारतान भी व्हा नहीं गार? तो जरु भगवान को आना पड़े। जौ अपना परिचय दे ले जाना पड़े। वारात हैना। वच्चे समझते हैं इसी कौसाथ में ले जावेगे। अगी संगम युग है तो जरु नई दुनिया में जाने का है। वच्चों को यह निश्चय है तब भर्तु दुनिया में जाने लाले हैं। गांधी का एमआरजेट कोई ऐसा नहींथा। वह तो जरु फैरेनर्स राज्य की उड़ाने की कौशलशक्ति थी। फैरेन राज्य नहीं चाहता था। अभी तुम जानते ही यह तो बैहद का फैरेन राज्य है। सारी दुनिया पर रावण राज्य है। भल ब्रिश्वन का राज्य था परन्तु आपस में फूट हैने कारणराज्य गवांये दिया। वाप ने परन्तु वह हैदह बलवान बहुत है। अगर वह आपस में फिल जाये तो सारी दुनिया पर राज्य कर सकते हैं परन्तु वाप समझते हैं वाहूंबलैस कोई भी बिश्व का राज्य पानहीं सकता। भारत का प्राचीन योगवल तो नामी-ग्रामी है। यह भी समझते हो ब्राह्मिंठ से 3000वर्ष एहरे हैविन था। दुसलभान भी समझते हैं यहिष्ठ था। परन्तु कव था किसने स्थापन किया वह कुछ भी नहीं जानें। ब्रिश्वन लौग फिर भी कहते हैं पैराडाईज था। भारतवासीयों को तो कुछ भी पता नहीं है। वह पिर भी तो बैहद है। यह तो विल्कुल ही तमीप्रधान दुधि है ना। भारतवासीयों की दुधि और उन्होंकी दुधि में फितना रात-दिन का एक है। कितनी उन्हों की नहीं न दुधि कु है व्हस आदि बनाने की। ब्रिश्वन ये जिसनानी धौत लाने लिये कितनी युक्ति स्त्री हुई है इवान के पत्नी अनुसार। वच्चे जानते हैं वाप बैठते हैं उनके साननेसभी वच्चे हैं। यह तो किसको भी याद नहीं लैंगे ना। किसको दूषित दंगेक्योंकि वाप इनमें है ना। कहेंगे अच्छा तुम ओपनिंग शिरोमणि कराते हौं मुरार्जी दैसाई इवारा। तो वच्चों के कल्याण लिंगैक्सैश्वर लैंगैर दूमिटदैरे को। पिर भी लड़ौंगे वाजा हींगा तो हो सकता है साठ जौ जाये। वह अनुभव बताते हैं। इनको तो याद में बैठना ही है। वाँचा दूषित देने वाला भी साथ में है। तो लैंगोंहा

करते हैं, जैसे वहुतों को ब्रह्मा का, कृष्ण का साठ होता है ना। पिर भी याप कहते हैं इश्वर में होगा तो। कृष्ण का तो पुजारी है ही। तो कृष्ण का राज्यगिलता है धू ब्रह्मा। दैवी दैवतों का राज्य तो ब्रह्मा इवरा ही होता है। तो सभी हो गक्ता है। ऐसे नहीं कहते मैं उस वच्चे की दृष्टि देता हूँ। उनकी सोल कौ यांद ल्कैगे। उनको ब्रह्मा का भी पाठ है, और कृष्ण का भी साठ है। तुम तो जानते हो ना हन वैकुण्ठ मैं जाने दलै हैं। वैकुण्ठ मैं प्रिन्स प्रिन्सेज बैनगे। तो साठ भी रहो हैं। आगे चल तुम्हारा नाम लिकता जावेगा। चिन्न दे भी है कैसे दौ बिलै आपस मैं लड़ते हैं, अखन बन्दर छा लैते हैं। अभी बन्दर आंद की तो बात नहीं। यूं तो समझते हैं यह भी बन्दर थे ना। तुम सभी बन्दर बुध थे। अभी पिर तुम अखन खाते हो दैवत देने का। बन्दरों के सेना भी खारोर है। तुम रावण पर जोतपाते हो। राम तो याप को ही कहा जाता है। याप सालते हैं कैसी सेना ली है। दबता बना देते हैं। स्वर्ग की स्थापना कर नर्क का विनाश कर देते हैं। उनमें (ओपनिंग करने काले) तो ज्ञान हैनहीं। और भी अगर इश्वर मैं होगा तो साठ होंगा। असर कर के ब्रह्मा और कृष्ण का ही साठ होता है। ऐसे नामों ग्रामी होते हैं तो याप भी अटेन्डान देते हैं। याप तो ऐसे बैठे रहते हैं वच्चों को जैसे दृष्टि देते रहते हैं। याप कट जाए। वैकुण्ठ के ग्रामेक बन जाए। तुम भी समझते हो हम क वैकुण्ठ के ग्रामेक बनने दालै हैं। वच्चों को खुशी तो है ना। परन्तु खुशी तथ रहे जब तो विचार सागर गृधन करते रहे। देहली मैं तर जानी है उनको भी क्लैक्ट करना होता है। वह लौग तो यह समझते नहीं हैं इस लड़ाई के अन्दर दीस बर्ज है। अद्वार ऐसी लिखानी है जौ समझे इस लड़ाई के बाद ही पीस स्थापन होनी है। तुम वच्चे जानते हो इस मैं पीस है। विनाश के बाद ही पीस स्थापन होनी है। यह भी समझते हो शान्तिधान। अलग है, सुख धान अलग है। यह दुःखाधान अलग है। यह भी समझाना पड़े। भल हैं तो शुद्ध। ब्राह्मण नहीं हैं। परन्तु आजकल उनको बड़ी धोहरा है। उनके आने मैं आवाज अच्छा होगा। अखावार मैं भी पड़ेगा। वडै२ आदमी का आवाज भी अच्छा होता है। यह जौ ब्रह्माकुधारीयों की इतनी गलानी होती है, जिस कारण ही अत्याधार आंद होते हैं। वह कैसे निकले उसके लिये यह युक्तियां हैं। कल्प2 यह युक्तियां निकलती हैं। कहते हैं गरीबों को भी यह नालैज देना चाहिए। याप भी कहते हैं मैं याद निवाज हूँ। परन्तु साहुकारों के आधार है ही गरीबों का भी यह पर होगा ना। गरीबों के कारण ही वडै२ को बुलाना होता है। वह अपना ओपनिंग दैगे तो ग्रन्थ सैडैर, आवा होगा। गरीबों का कोई सुनता थोड़ी है। साहुकारों का आवाज अच्छा होता है। सह समझाना है पवित्रता से क्लैक्टर्स भी गुधरते हैं। और पिर ग्रन्थ सूष्टि भी बढ़ेगी नहीं। मुठ भर हो जाएगा। अखावार बालै भी डालेंगे कैंप ज्ञान यह समझाया गया। यह विनाश ही पीस का निर्वित कारण है। जैसे ग्रीई रुता है तो सन्नाटा हो जाता है। यह भी ऐसा सन्नाटा हो जाएगा। सन्नाटा भी ही शान्ति। यहां कितने छेर ग्रन्थ हैं। और स्तरयुग मैं बहुत थोड़े होगे। तो यह समझाना पड़ता है। वडै२ आदमी का अखावारों में भी डालैते। टाईम्स ऑफ इण्डिया बालै तो कहते हैं हमको फरजान बिला हुआ है ब्रह्माकुधारीयों का लैछा, ऐसे आंद तो है तो भी न डालना। ऐसी कुछ आर्डर गवर्नेंट की गई है। नायादी गवर्नेंट तो है ना। पाण्डव गवर्नेंट की तो है, पांच पाण्डव। तुम पाण्डव देना दा पाण्डव सम्बद्ध हो। पाण्डव और फौख देना गाई हुई है। वह है जिरमानी हैना। तुम ही स्तानी। तो याप ने समझाया यहां देठे हो दो दो चलते पिरते हो। यह बुध भी याद रहे बादा हरारा लुधिय याद है टीचर गुस है। याद करने मैं ही याप कट जाएगे। कहते भी हैं वह नालैजफुल है। जानी जाननहार है। और भी कच्चे देते ठिक्कर मितर मैं है। बिलकुल ही दैस-दै पुष्य हैं। तुम भी दै समझ थै ना। अभी राज्यदार बन विश्व के ग्रामेक बनते हो। अभी दिश्व मैं हो दुःख। और विश्व मैं ही हुष्ट शान्त होंगो। नई विश्व मैं जस सुष्ट गुनी विश्व मैं जस दुःख होगा। पुराने नकान मैं दुःख न हो तो नया बालै ही क्यों। यह है वैहद की बात। यह पुरानी दत्तित दुष्टिया रहने के लायक नहीं है। विश्वस की नालायक कहेंगे ना। काम का भूत दैहओधान का

भूत कितना है। इन भूतों पर भी विजय पानी होती है याद की बल से। याद नहीं करेगे तो विजय कैसे पावेगे। लिखते हैं दावा हम काला बुंह कर दिया। अभी आप कृपा करौ क्षमा करी। अभी इस मैं क्षमा की तो बात ही नहीं। तक्षीप्रधान काम करने से तुम ही गिरते हो। बह खुशी वह याद की यात्रा रह न सके। अपने पैर पर आपेही कुलाड़ी भारते हो। वाप सभी की आर्शीवाद देते हैं क्या। वह तो बात हीनहीं। संग दौष मैं आकर अथवा वाया के दस होकरकुछ कर लिया, अपने ही पैर पर कुलाड़ा थारा। काम चिक्का पर बैठ करै हो गये। वाप भी कहते हैं हमारे बच्चे काम चिक्का पर बैठ करै हो गये हैं, फिर उनकी ज्ञान-चिक्का पर बिठ्ठा हूँ। समुदा आते हैं तो सब्बाना पड़ता है ज्ञान चिक्का पर बैठो तो ऐसे गोरा बनो। इस जन्म में ही पढ़ाई करनी है। जो चले गये हैं वह फिर भी संस्कार ले गये हैं तो फिर आकर ज्ञान लैगे। जितना देरी से फिर उतनावड़े हो न सकेंगे जो ज्ञान आये लेवे। कोई 2 छौटे बच्चों का बट अटेन्शन जाता है। शिव वावा कहने लग पड़ती है। अत्मा मैं संस्कार है ना। इसलिये वाप की याद करते हैं। वाप कहते हैं छौटे बच्चों की भी वाप से बरसा लैने का हक है। तुम सभी की पैगाम देते रहो। अखदरों इवारा तुम्हारा पैगाम जारैगा। बदनामी भी अखदरों से हुई है। बड़ौ 2 को बुलावेंगे तो अखदरों मैं डालेंगे। तुम्हारे पास ब्लाक भी तैयार रहनी चाहेगा। प्रेस दाले जांगे तो तैयार रहे हो। नीच लिखत भी लिखनी हैं। डिटी बर्ल्ड साक्स्टी गाड पन्दरलो वर्धसईठ। तो यह भी गोया पैगाम भिला। शुरू मैं दिलायत तक अखदरों द्वारा आवज गया था सक जदाहरी है जिसकी 16200 रानीयां चाहेगे जिसमें इतनी भिली है। तो फिर अखदरों द्वारा ही तुम्हारा नामाचार भी होगा। वाकी अपन को अत्मा समझना, यह भैहनत इस समय की है। जब कि पादन बनाए घर जाना है। योगवल से तुम तक्षीप्रधान से सतेप्रधान कितना बलबान बनते हो। इसमें पेल होते हैं तद तो बच्च कहते हैं बाबा आज हम से यह हो गया। बहुत गिरते हैं। भाकी भी पहन लैते हैं। फिर कोई सच्च लिखते हैं यह हम से भूल हुई। कोई सच्च नहीं बताते। यहां वाप दादा दौनों इकट्ठे हैं ना। रिपोर्टस आती है। ऐसे नहीं वाप जानोजाननहार है। नहीं। वह भी सुनते हैं यह भी सुनते हैं। फिर लिखते हैं वांवा कि आकर भूल जैसे तो ऊंच दद नहीं पा सकेंगे। अपने पांच पर कुलाड़ा लाते हो। जो जेसा करेंगे वैसा पावेंगे। यह बड़ी समझ की वात है। तुम्हारी कहते हैं यह इतना खर्च कैसे होता है, पैसे कहां से आते हैं। उनकी यह पता नहीं यह है इश्वरीय पारेवा। तो जर उन्होंने पास पैसे होंगे ना। साकार पारेवा है। तो आपेही खर्च भरेंगे। शिव वावा तो ऐसे ले नहीं आते हैं। तुम्हका अपने 2 पुस्तार्थ से दैवी स्वराज्य स्थापन करना है। इसमें लड़ाई आदि की कोई जात नहीं। इस सहज राजयोगी से पैराडाईज कैसे स्थापन होता है यह समझना है। अपन को अत्मा समझ वाप की याद करो तो सर्वशक्तदान वाप है शक्ति गिरेंगी। पवित्र बनने हैं भुवितधाय चले जावेंगे। और फिर नालैज से जीतन मुकेत मैं। यह भी पैगाम देना है। जो कुछ कल्प पहले किया है दही घत वाप देते रहते हैं। वहुतों को नीद में स्वप्न भी आते हैं। ऐसा जबकैदा जाता है तो समझाया जाता है। बड़े आदमी के दीछे देर आ जाते हैं। म्युजियम है विहंग भार्ग की स्टॉर्म। सेन्टर खोलकर बैठ जाओ, फिर कोई औद न आवे वह है चिंटी भार्ग। यह सूज है। जितना जस्ती भभका उतना जस्ती आते हैं। मुख्य दिल्ली कैपिटल मैं ही थी धेराव डालना है। बड़ों का अदाज, निकेंगा। फिर गरीबों की भी सार्वेस करने जाना है। चित्र आदि सान्ध्री पूरी चाहेगा। इक्षा के पलेन अनुसार कोशश की जाती है। कपड़े पर रख्युट चित्र छप जाये तो दिलायत मैं भी वापा भेज सकते हैं। एक ट्रॉप मैं ही तुम लखपति बन जायेंगे। यह ऐसी चीज है। वह गीतार्थ कैसे बैचकर आते हैं। महाभृषि आदि का इस समय कितना मान है। अभी उन्होंने का टाईफ नहीं है। अभी अगर आ जाये तो सभी कहेंगे इन्होंने ब्रह्मनामार्थों का जादू लगा है। उन्होंने के सभी शिष्य आदि अभी नहीं आवेंगे। अभी नहीं। यह प्रिछाड़ी मैं आवेंगे। इक्षा अनुसार जो कछ सार्वेस लर रहे हो वह छक्के ठीक है। अद्या जोठै 2 स्लानी बच्चों की रुहानों वाला दादा का याद प्यार गुडनौरेंगे। और न रहते।